बिलावास का इतिहास.....

बीलोजी की ढाणी बनी बिलावास नगरी

भारतवर्ष की पावन धरा जहाँ एक तरफ अपने सुरम्य प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए जग विख्यात है वहीं दूसरी तरफ इसके कोने - कोने में स्थित विभिन्न पावन तीर्थ स्थल इसके देवभूमि होने के साक्ष्य हैं। इस पुण्य धरा जहाँ - जहाँ भी अवतारी दैवीय शक्तियों के चरण पड़े, वह भाग मानव जाति के लिए सदा वंदनीय हो गया। वीरों की भूमि राजस्थान के पाली जिले के अन्तर्गत एक ऐसी ही जगह हैं ग्राम बिलावास, जहाँ लगभग पाँच सौ वर्ष से पूर्व गुजरात के अम्बापुर गाँव में अवतरित माँ भगवती जगदम्बा स्वरूपा श्री बिलावास उन दिनों बीलोजी की ढाणी के नाम से जाना जाता था।

यह विक्रम संवत् 1529 की बात है जब मरूधरा की पावन धरा पर श्री आई माताजी ' जीजी ' अपने धर्मरथ (भैल) से धर्म प्रचार करते और अपने भक्तों को जीवन कल्याण उपदेश देते हुए नारलाई, डायलाणा, भैंसाणा, सहावज, सोजत, बीला ढाणी, पतालियावास होते हुए बिलाड़ा पहुँची। श्री आई माताजी 'जीजी ' सहवाज से आगे चलते - चलते सोजत के रास्ते से होते हुए सूकड़ी नदी के किनारे - किनारे चल रहे थे। रास्ते में नदी के किनारे एक सीरवी जिसका नाम बीला था, उसकी ढाणी आई। बीला ईश्वर भक्त था। अतिथि सत्कार में हमेंशा अग्रणी रहता था। जब जीजी माता बीला की ढाणी के पास पहुंचे तो उस समय शाम हो चुकी थी। जीजी ने रात्री विश्राम करने की इच्छा से बीलोजी का दरवाजा खटखटाया। बीलोजी की धर्मपत्नी ने दरवाजा खोला तो देखा कि एक वृध्द माता नांदियों (बैलों) को लेकर दरवाजे पर खड़ी हैं। बीलोजी की धर्मपत्नी ने बिना कोई सोच विचार किये कहा, 'माताजी अन्दर आईये। ' बीला ने जीजी को प्रणाम कर बड़े आदर से अपनी ढाणी के आंगन में चारपाई पर बैठाया और बाहर जाकर बैल (नादियों) को खूंटे से बांधकर घास (चारा) डाल दिया। बीलोजी पंवार एंव धर्मपत्नी धार्मिक प्रवृति की थी। बीलोजी पंवार उनकी धर्मपत्नी और परिजनों ने हर्षित मन से माँ जीजी की आवभगत और सेवा सुषुश्रा की। उनकी सेवामें हाथ जोड़कर पास बैठ गई। बहुत दिनों तक माँ जीजी ने बीलोजी सिरवी का आतिथ्य स्वीकार करते हुए तथा अपने उपदेशों से भक्तों का कल्याण करने और उनकी दु:ख - पीड़ा हरने के बाद माँ जीजी बलिपुर पधारने का निश्चय किया। उन्होंने बीलोजी को अपने मन की इच्छा बताते हुए कहा-

जल तो सदा बहता भला, रमता भला नित सन्त।
बहता नीर निर्मल रहे, सन्त करे दुखों का अन्त।।
अब मैं भी आगे बढ़ चलूँ, नगर बलिपुर जाऊँ।
जन कल्याण में अपना शेष, जीवन वहीं बिताऊँ।।

माँ जीजी की इच्छा जानने के बाद बीलोजी और उनकी धर्मपत्नी ने जीजी को दण्डवत प्रणाम किया। बीलोजी सीरवी और उनकी धर्मपत्नी द्धारा निष्काम भाव से की गई सेवा से माँ जीजी अत्यंत प्रशन्न थी। उन्होनें धर्मपरायण व सेवाभावी दम्पति की भक्ति से बहुत खुश हुई और वरदान (आशीर्वाद) देते हुए कहा - बीला थांरी ढाणी सवाई (खूब) बढ़ेगी तेरे परिवार में किसी बात की कमीं नही रहेगी। धन - धान्य से कोठियां भरी रहेगी, तेरा नाम अमर रहेगा। मँा जीजी (आईमाताजी) का आशीर्वचन फलीभूत

हुआ और उनके वरदान से वही बीलोजी की ढाणी **आज बिलावास ग्राम (बिलावास नगरी) के नाम से गांव आबाद हैं ।** बीला का नाम आज भी अमर हैं । सीरवी बाहुल्य यह बिलावास ग्राम आज भी उस सुनहरे गौरवशाली इतिहास का साक्षी है ।

राजस्थान के पाली जिले के अन्तर्गत आने वाला बिलावास ग्राम सोजत सिटी से पश्चिम में पॉच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । जबकि धिनावास से 3 किलोमीटर, हिंगावास से 4-5 किलोमीटर, लुन्डावास से 3-4 किलोमीटर, की दूरी पर स्थित है । मॉ जीजी के आशीर्वाद से आज बीला ढाणी बिलावास नगरी बन गई है । इस गाँव में सीरवी समाज के करीब दो हजार परिवार हैं । इनमें अलावा अन्य समाजों के लोग भी इस गाँव में हैं सीरवी समाज के बड़े - बुजुर्ग पहले खेतीबाड़ी का कार्य करते थे और आज भी अपना पुश्तैनी काम कर रहे हैं । नई पीढ़ी के युवा पढ़ - लिखकर कारोबार करने के लिए गाँव से बाहर निकले और दक्षिण भारत सहित देश के विभीन्न शहरों में अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी के साथ व्यावसाय करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं । अपनी जन्मभूमि ग्राम बिलावास से बाहर निकले प्रवासी सीरवियों की देशभर में लगभग चार सौ दुकानें/ व्यावसायिक प्रतिष्ठान हैं । प्रवासी सीरवी समाज का अपनी कर्मभूमि में समाजसेवा और धार्मिक कार्यो में बढ़ - चढ़कर हिस्सा लेने के साथ ही अपनी जन्मभूमि को भी नहीं भूला हैं । वह अपनी जन्मभूमि से भी जुड़ा हुआ है और अपनी कमाई का कुछ हिस्सा जन्मभूमि के लिए निकालते हुए गौशाला, अस्पताल आदि के निर्माण एवं संचालन में लगाकर निरन्तर सहयोग प्रदान करता रहा है ।

बिलावास के बीचोंबीच स्थित है चार सौ वर्ष पुर्व अत्यंत प्राचीन ठाकुरजी मंदिर, आईमाताजी का मंदिर, भगवान शिवजी का मन्दिर श्री हनुमानजी का मंदिर और जैन मंदिर । बिलावास में वाड़िया बेरा पर आईमाताजी का एक और मन्दिर, ढिमड़ी में सिरियादे माता का मंदिर और शीतलामाता का प्रचीन मंदिर भी हैं । जबकि धिनावास के रास्ते पर श्री सोनाला खेतलाजी का मंदिर हैं । बिलावास में एक राजकीय पाठशाला एंव हाईस्कुल हैं । गाँव के बाहर गाँव की गोचर भूमि हैं, जिस पर एक विशाल गौशाला का निर्माण किया गया है । यह गौशाला पहले चारभूजा गौशाला के नाम से जाना जाता अब इसका नाम बिलावास गौशाला सेवा समिति के नाम से जाना जाता हैं । गौशाला में लगभग पॉच सौ गायों और गौवंश का अत्यंत सुन्दर एंव सुव्यवस्थित ढ़ग से लालन - पालन हो रहा हैं । गाँव के बाहर सुकड़ी नदी हैं । बिलावास को देवों की नगरी के नाम से भी जाना जाता है । श्री आईमाताजी के आशार्वीद से यह गाँव विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है ।